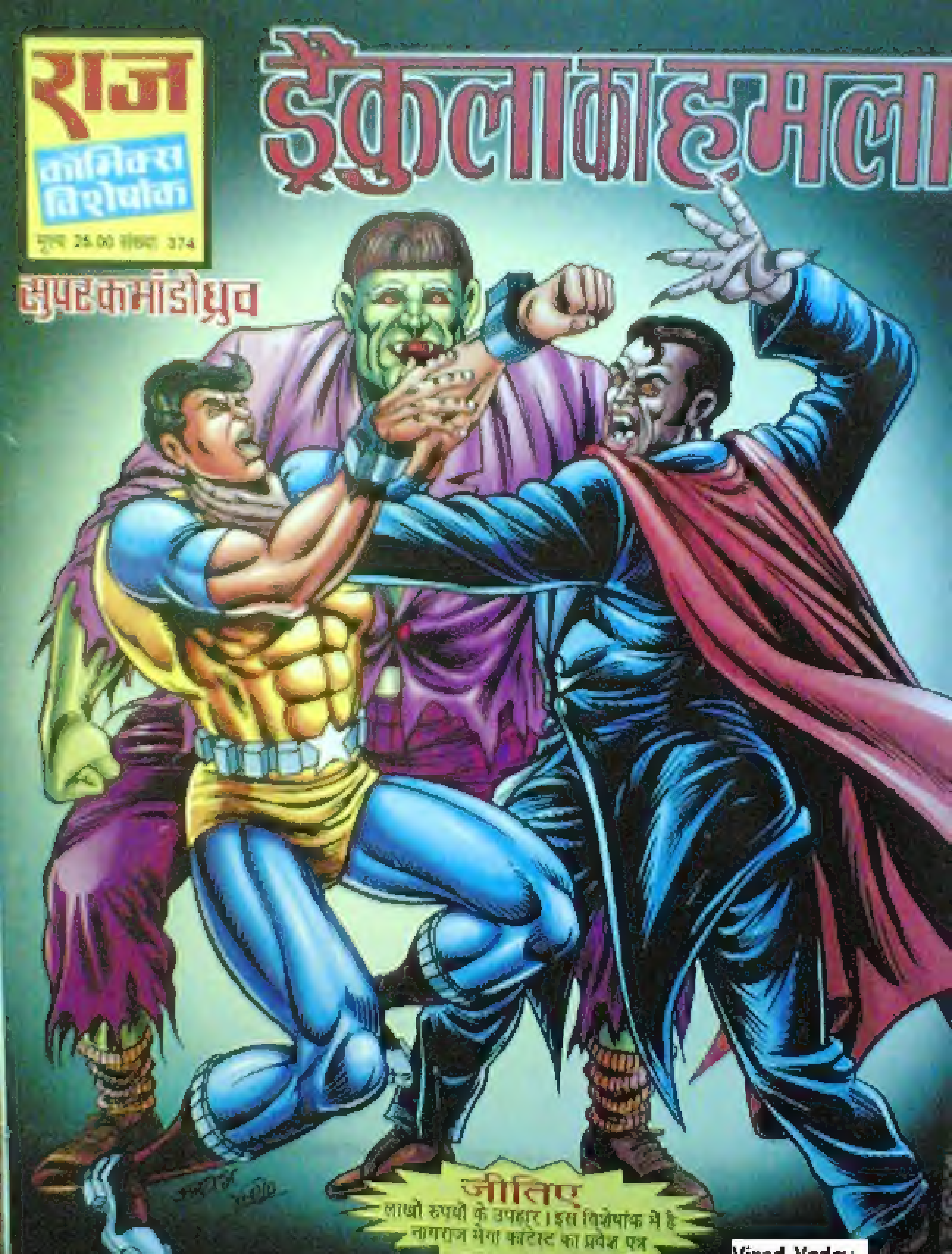
राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 25.00 संख्या 374
ड्रैकुला का हमला
सुपर कमांडो ध्रुव
जीतिए
लाखों रुपयों के उपहार। इस विशेषांक में है
नागराज मेगा कांटेस्ट का प्रवेश पत्र

Vinod Yadav

और इस वक्त ड्रैकुला को खून चाहिए! एक जवान लड़की का खून!
भूखे शिकारी की नज़रें अपने शिकार को ढूंढ़ ही निकालती हैं-
चाहे वह शिकार सात पर्दों में ही क्यों न छुपा हुआ हो-

और एक बार शिकार पर नजर पड़ते ही, शिकारी की भड़कती हुई भूख बर्दाश्त से बाहर हो जाती है-
और शिकारी बगैर एक भी पल गंवाए-
धमाक
शिकार पर टूट पड़ता है-
और तब उसको पता चलता है-
कि वह शिकार नहीं, शिकार फंसाने वाला चारा है-
ये... ये तो मोम की गुड़िया है!
कड़कक
और तब शिकारी खुद शिकार बन जाता है-
तुम्हारी भूख ही तुम्हारी मौत का कारण बनेगी, ड्रैकुला!

...तुम हमारे जाल में फंस गए हो! और यहां से तुम जिन्दा बाहर नहीं जा सकते!
डोलन! तो... ये... ये सब एक सोची समझी हुई योजना थी! लेकिन तुमने मुझे यहां पर बुलाकर मेरी नहीं, बल्कि अपनी मौत को बुलाया है!
दरवाजे और खिड़कियों पर मुझे अपने से दूर रखने के लिए लहसुन की मालाएं लटकानी बेकार है! मैं यहां से भागूंगा नहीं...
मुझे तो भूख मिटानी ही है! खून पीना है मुझे! लड़की का न सही तो मर्द का सही! जवान का खून न मिले तो बूढ़े का पतला खून भी चलेगा!
हम वेम्पायर उन्मूलन समिति के सदस्य हैं, ड्रेकुला! तुम्हारी कमजोरियों को भी पहचानते हैं और अपनी ताकतों को भी! तुम अब कुछ नहीं पियोगे!
आज की रात तुम्हारी नापाक जिन्दगी की आखिरी रात होगी!
आज तुम मरोगे ड्रेकुला! आज तुम मरोगे!
धड़ाक
हा हा हा! ड्रेकुला इन मामूली हथियारों से नहीं मर सकता मूर्खों!

अब तो मैं क्रॉस तक से नहीं डरता! ले, देख ले! क्रॉस को पकड़ लिया मैंने।
और... और तुम्हारे हाथ जले तक नहीं! प्रभु के निशान पर विजय प्राप्त कर ली तुमने। हमको सही सूचना मिली थी कि तुम्हारी शक्तियां अब उत्थान की ओर हैं।
सही सुना है तुमने! अब तो मैं उगते और डूबते सूरज की किरणों को भी सह सकता हूं। अब वे मेरे शरीर को जलाती नहीं हैं।
जल्दी ही सूर्य भी मेरा दुश्मन नहीं रहेगा। फिर रात हो या दिन, ड्रैकुला बेखटके कहीं पर भी आ-जा सकेगा।
फरिश्ते गैब्रियल ने! और उसी फरिश्ते ने तुमको खत्म करने का रास्ता भी दिखाया है हमको।
लेकिन... अरे! ये सूचना तो अत्यंत गुप्त है!
मेरे अलावा और कोई यह बात नहीं जानता। फिर ये सूचना तुमको कहां से मिली?
गै... गैब्रियल! क्या बताया उसने?
यही कि तुझको किसी संत की हड्डियों से बना क्रॉस मार सकता है!

संत! हा हा हा! अरे संत तो गुजरे जमाने की बात बन गए हैं! आजकल तो सिर्फ मेरे जैसे पापी पैदा होते हैं, संत नहीं! जब संत नहीं मिलता तो संत की हड्डियां कहां से मिलेंगी?
इन पुराने संतों की तो हड्डियां तक गलकर मिट्टी बन चुकी होंगी!
तब तो तुमने यह नहीं सुना कि महान समाज सेवक प्रभु के दास पुलेजियन को अभी-अभी पोप ने संत की उपाधि प्रदान की है!
लेकिन वह तो अभी जिन्दा है! और अभी जल्दी मरने वाला भी नहीं है! फिर तुम्हें उसकी हड्डियां कहां से मिलेंगी, डोलन?
उन्होंने प्रभु के नाम पर पाप मिटाने के लिए अपना बलिदान देने का संकल्प लिया था।
एक महीने से खाना-पीना छोड़ रखा था उन्होंने। और कल से उन्होंने सांस लेना तक बंद कर दिया था। और प्रभु की लीला देखो! मरते ही उनके शरीर से मांस और खाल अपने आप लुप्त हो गई! अब बचा है तो हड्डियों का ढांचा! तुम्हारी मौत का सामान!
ओह! लेकिन ड्रैकुला अमर है! उसको... कुछ-कुछ भी नहीं मार सकता! अरे, अभी मैं कैसे मर सकता हूं! अभी-अभी तो मैंने नई-नई शक्तियां प्राप्त करनी शुरू की हैं!
ये सिलसिला यहीं पर खत्म होगा ड्रैकुला!

तुम्हारी मौत की घड़ी आ गई है ड्रैकुला!
जब पकड़ पाओगे तब ये क्रॉस मेरे सीने में उतारोगे न!
पहले ढूंढो तो कि ड्रैकुला है कहां?
ओह! क्रॉस मेरे हाथों से छूटकर खिड़की से बाहर जा गिरा है!
अब ऐसे ही तुम सबकी जिन्दगियां भी तुम्हारे हाथों से छूट जाएंगी!
ड्रैकुला का विकराल रूप था वह-
एक-एक करके 'वैम्पायर उन्मूलन समिति' के सदस्यों के बदन खून से खाली होते जा रहे थे-
आह! हा हा हा! भूख मिट गई ड्रैकुला की! सुना था कि इंसानों को मौत बुलाती है! लेकिन यहां पर तो मौत को इंसानों ने बुला लिया! अब कौन मारेगा ड्रैकुला को! अरे, कोई है? आओ, मारो ड्रैकुला को!
कोई नहीं है! कोई नहीं है ऐसा इस दुनिया में! अरे...ये आवाज कैसी?

अरे, अरे! ये... ये हड्डियों का ढांचा अपने आप उठकर कैसे खड़ा हो रहा है? ये कैसा चमत्कार है?
बाहर जाने के सारे रास्तों पर ड्रैकुला की सलाखें मुझे बाहर जाने से रोक रही हैं!
लेकिन भागने की क्या ज़रूरत है? ये हड्डियों का ढांचा मेरा भला क्या बिगाड़ लेगा!
जो उसके अंत का कारण बन गई-
इसको मैं तोड़ डालूंगा! टुकड़े-टुकड़े में बांट दूंगा इसको!
ड्रैकुला यहीं पर वह गलती कर गया-
अरे! सारी हड्डियां क्रॉस के रूप में जुड़ रही हैं! और ये सब एक साथ अलग-अलग दिशाओं से मुझ पर हमला कर रही हैं!
हमला चारों तरफ से हो रहा था-

और ड्रैकुला चारों तरफ एक साथ नहीं देख सकता था-
ये... ये हड्डियों का चक्रवात मुझे धुंए में भी बदलने नहीं दे रहा है। मेरी शक्तियां... मेरी शक्तियां...
... आऽऽऽह!
और इस तरह से ड्रैकुला का शरीर धूल के ढेर में बदल गया, सुबह होने पर लोगों ने शरीर क्रॉस को हटाए उस धूल को उठाकर...
... उसी के किले के अहाते में दफन कर दिया। ड्रैकुला का धूल बना शरीर अभी भी वहीं पर दफन है! और वह हड्डियों का क्रॉस अभी भी उसके शरीर में धंसा हुआ है!

ड्रैकुला का हमला

संजय गुप्ता की पेशकश

कथाः	चित्रः	इंकिंगः	सुलेख एवं रंगसज्जाः	सम्पादकः
जॉली सिन्हा	अनुपम सिन्हा	विनोदकुमार	सुनील पाण्डेय	मनीष गुप्ता

ये जीवित प्राणियों के

कोई और इंतजाम करूंगा।
लिया है।

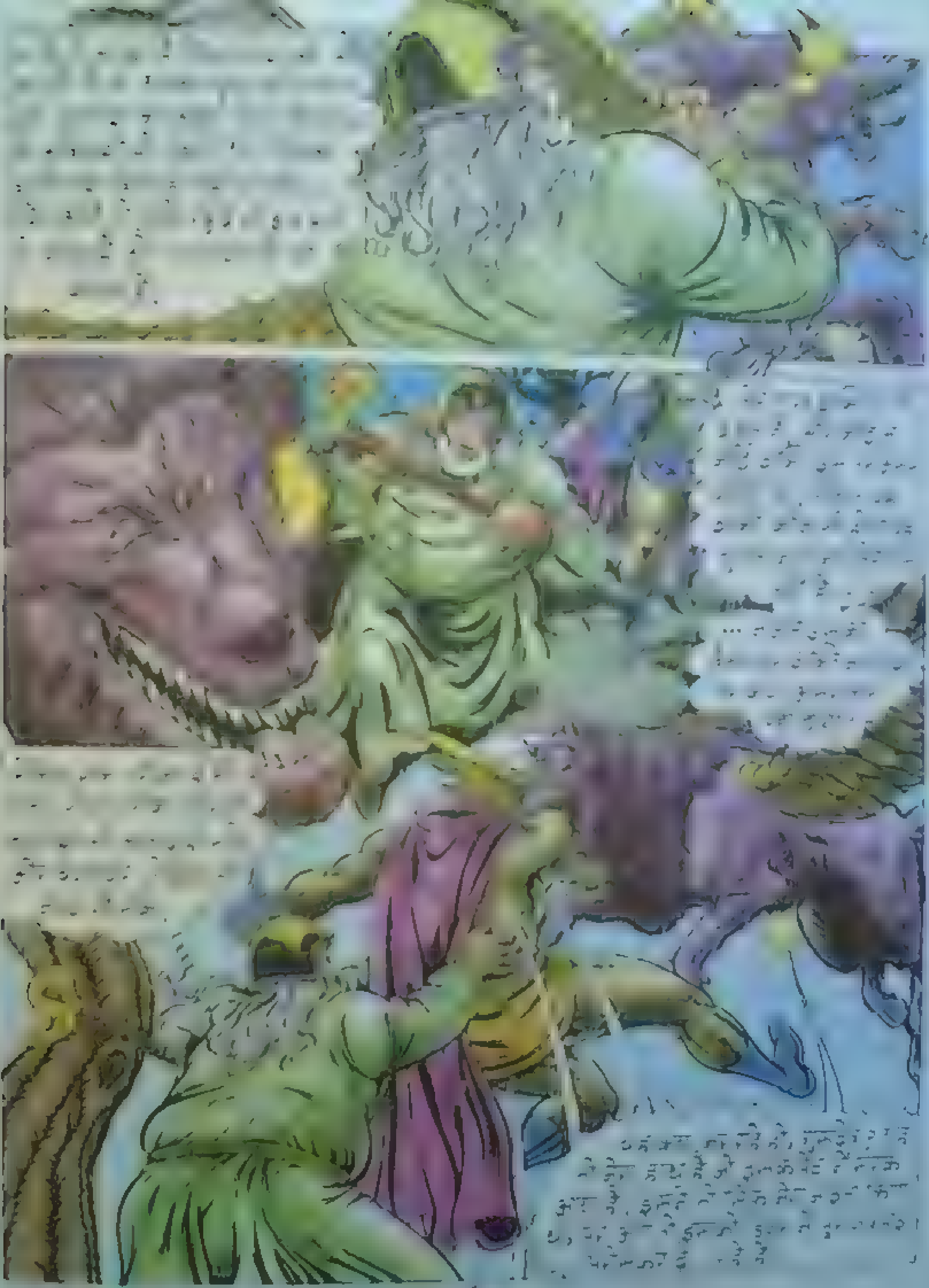

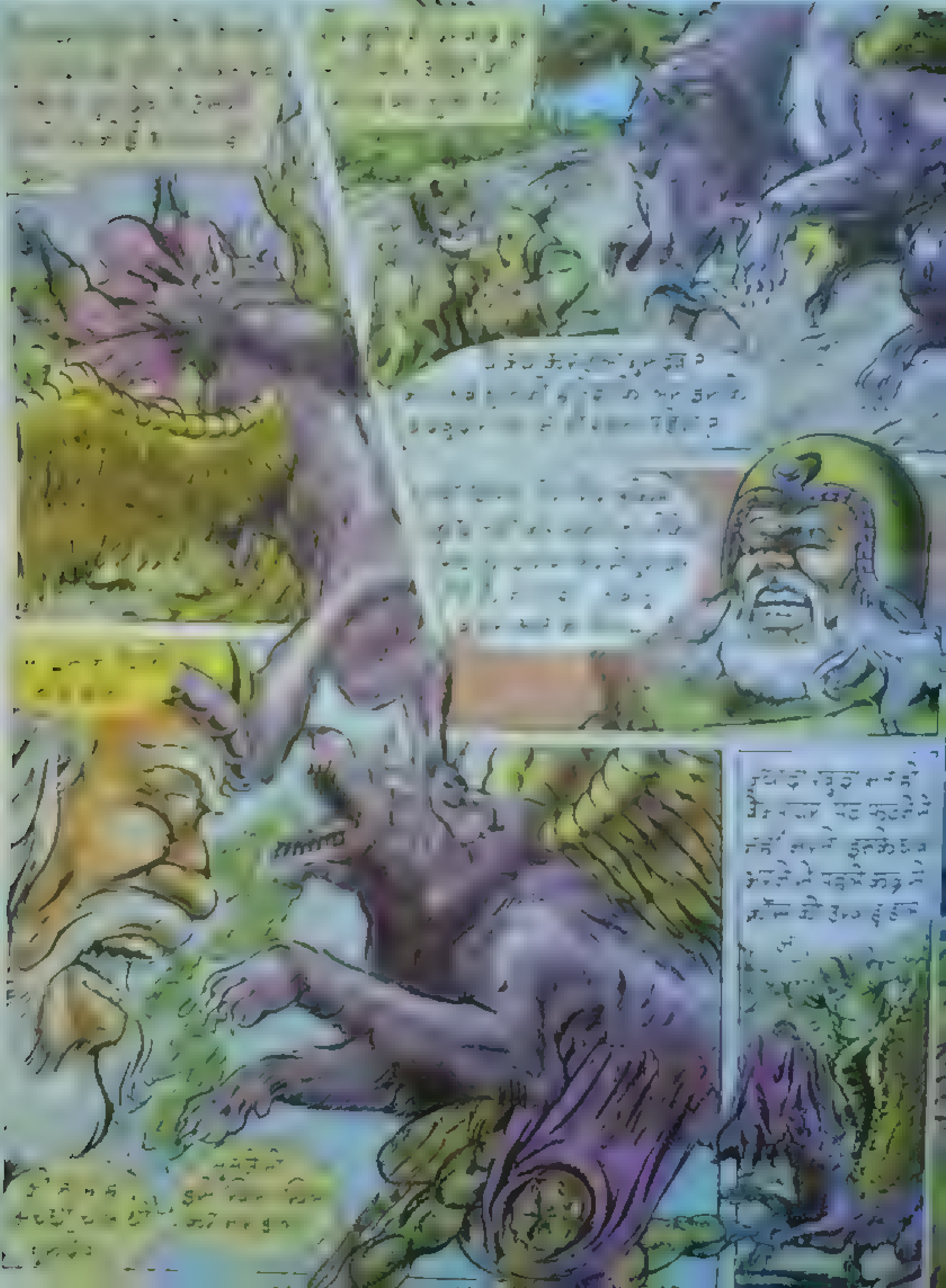

वहाँ पर जमीन में धंसी हुई है

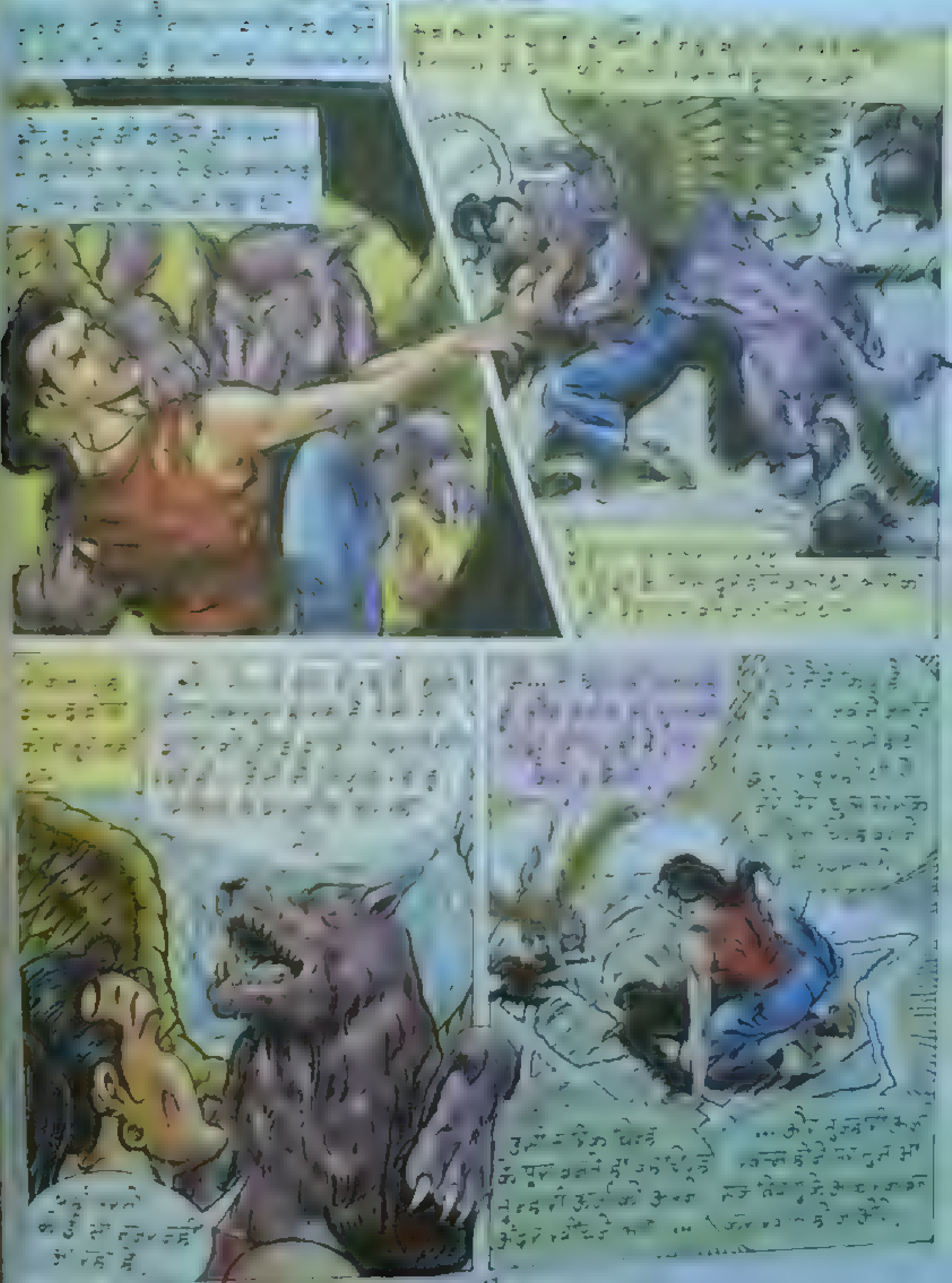

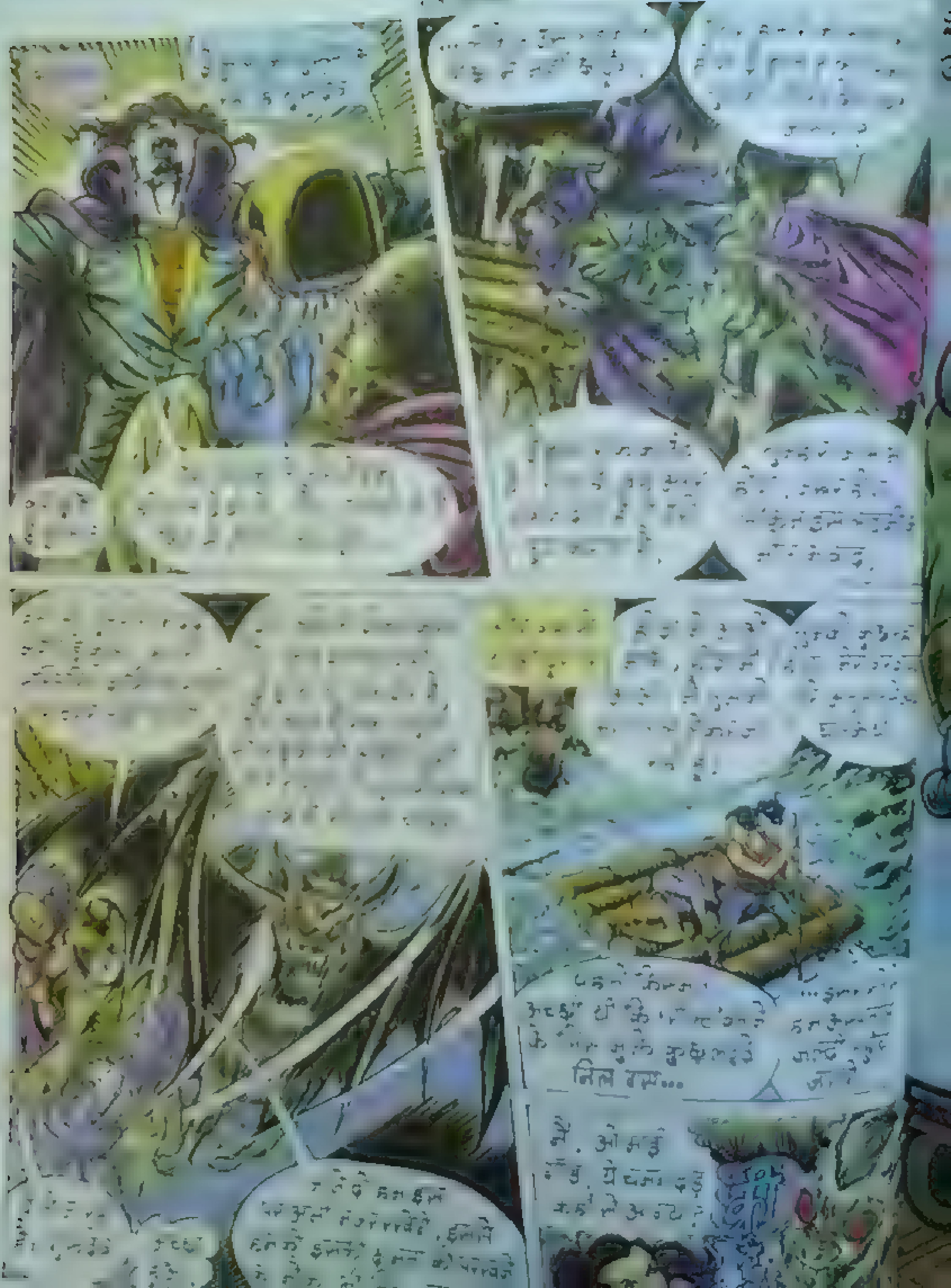

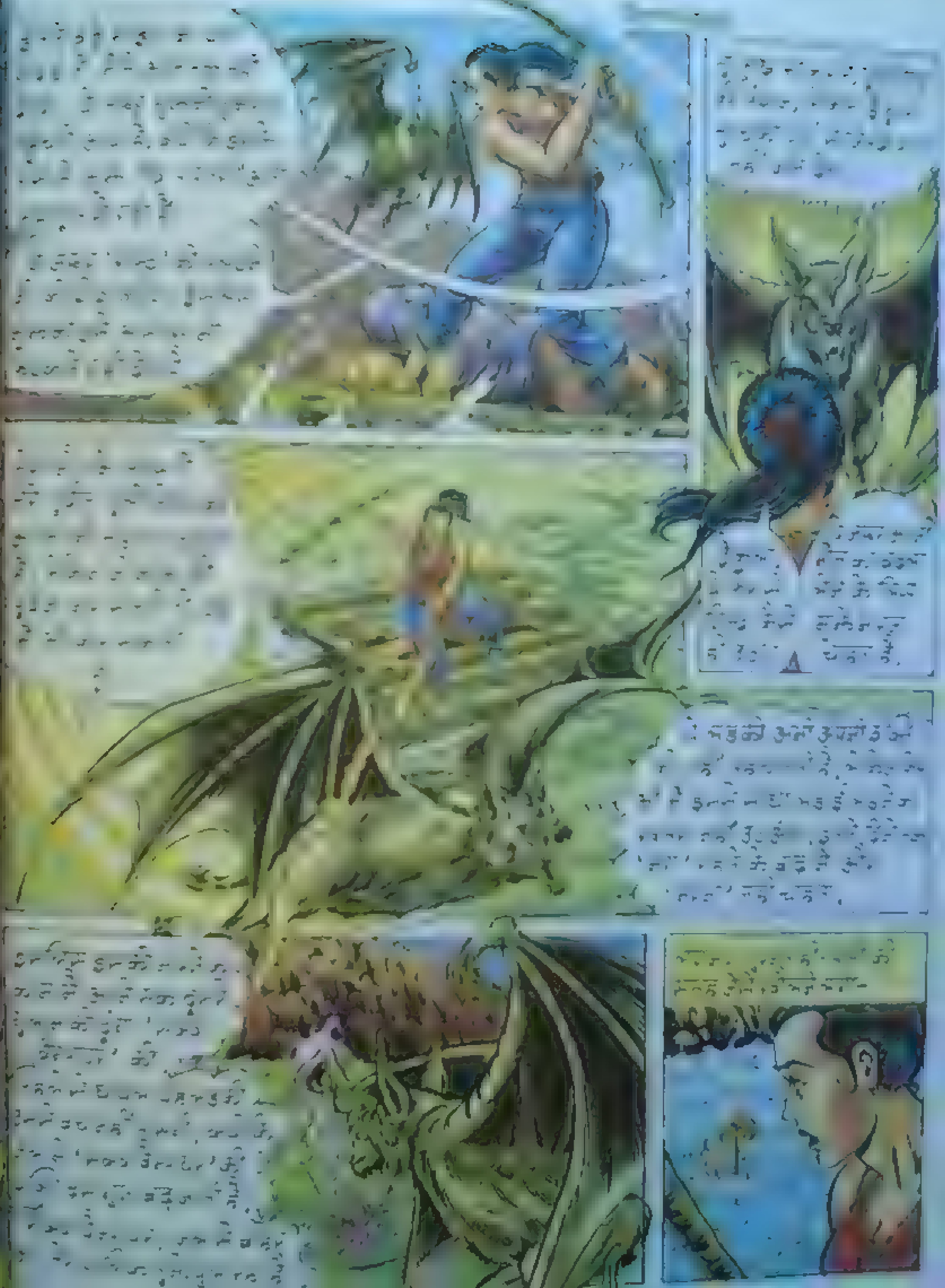

हा हा हा!

मौका फिर से मिले तो मैं
फिर से आपका अपहरण
करा लूं।
बच्चे को छुड़ा लिया है।

इनको मैंने बुलाया है
ध्रुव! अपने पीछे देखो

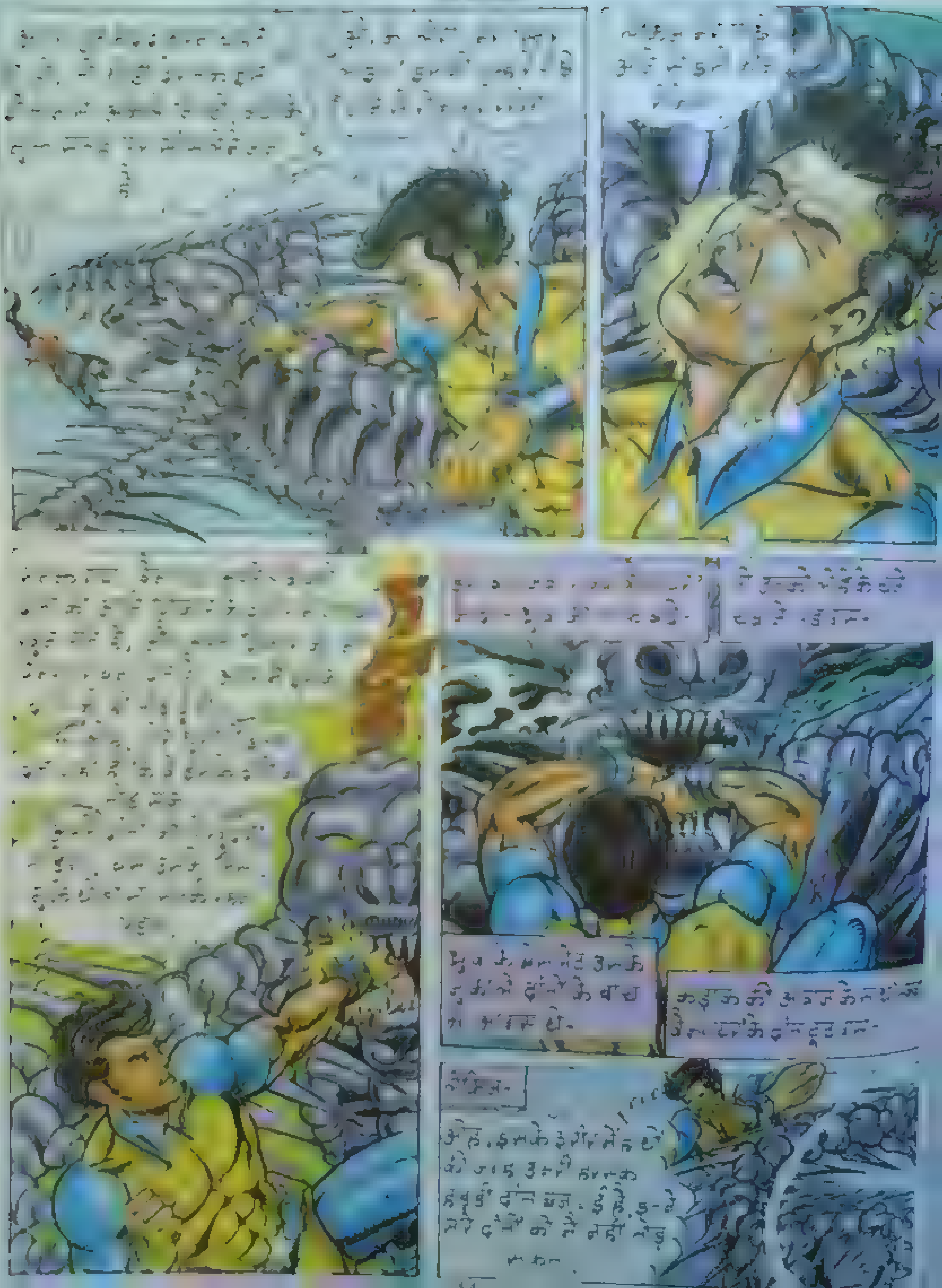

की तरफ तना हुआ है।

भी नहीं सकती है ध्रुव.
लेकिन इस समस्या का हल

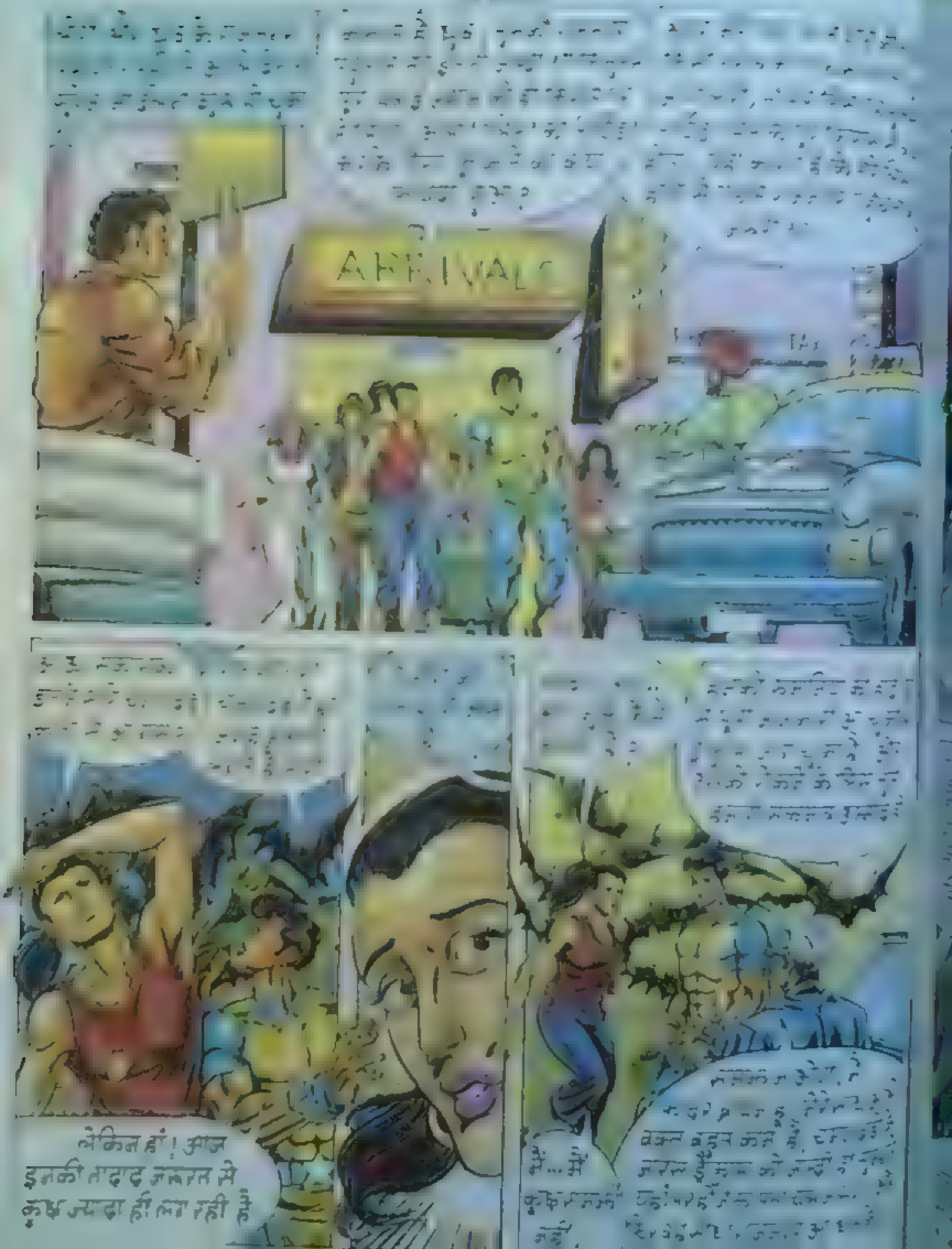
ARRIVALS
लेकिन हां! आज इनकी तादाद जरूरत से कुछ ज्यादा ही लग रही है
मैं... मैं

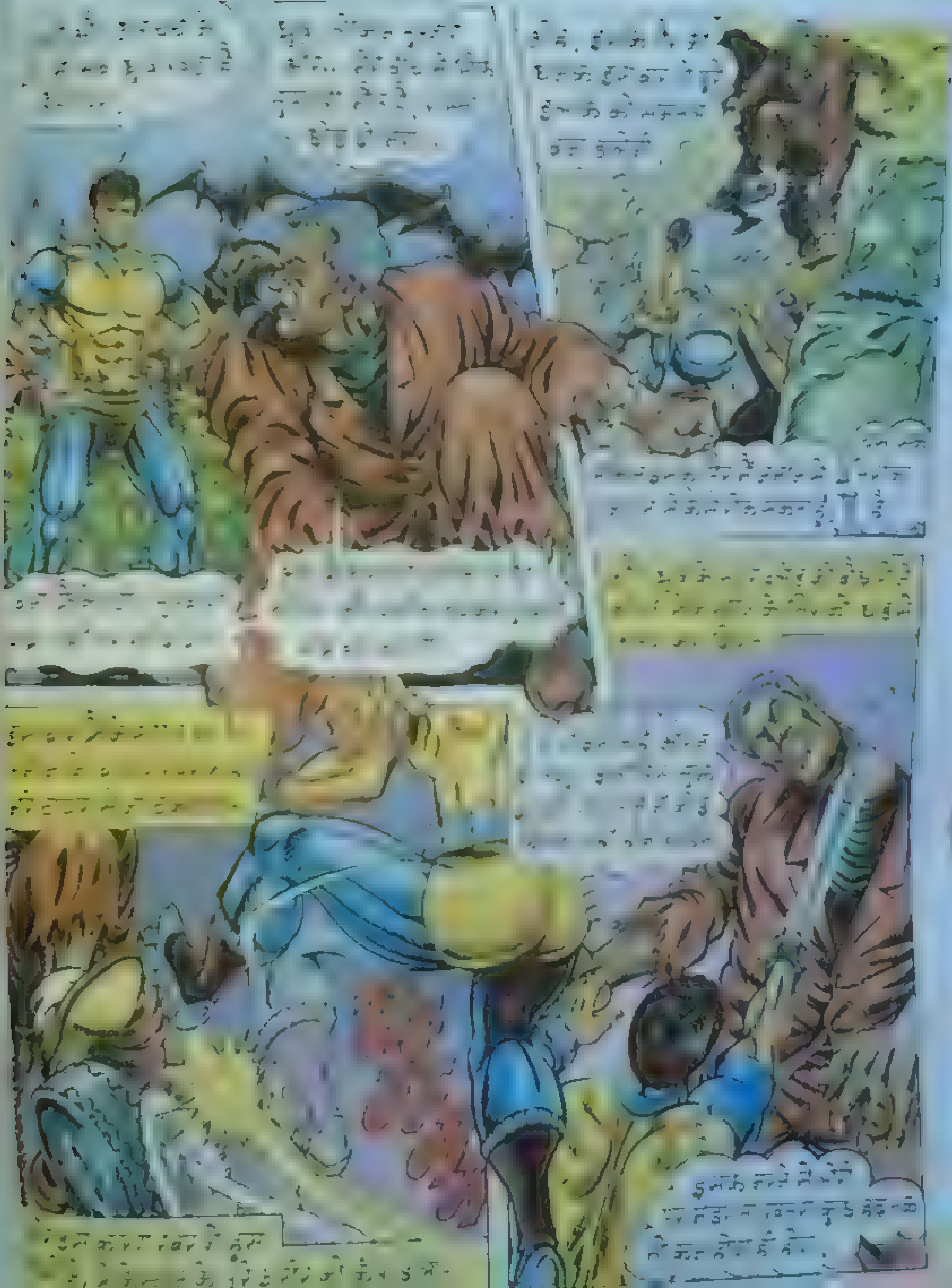

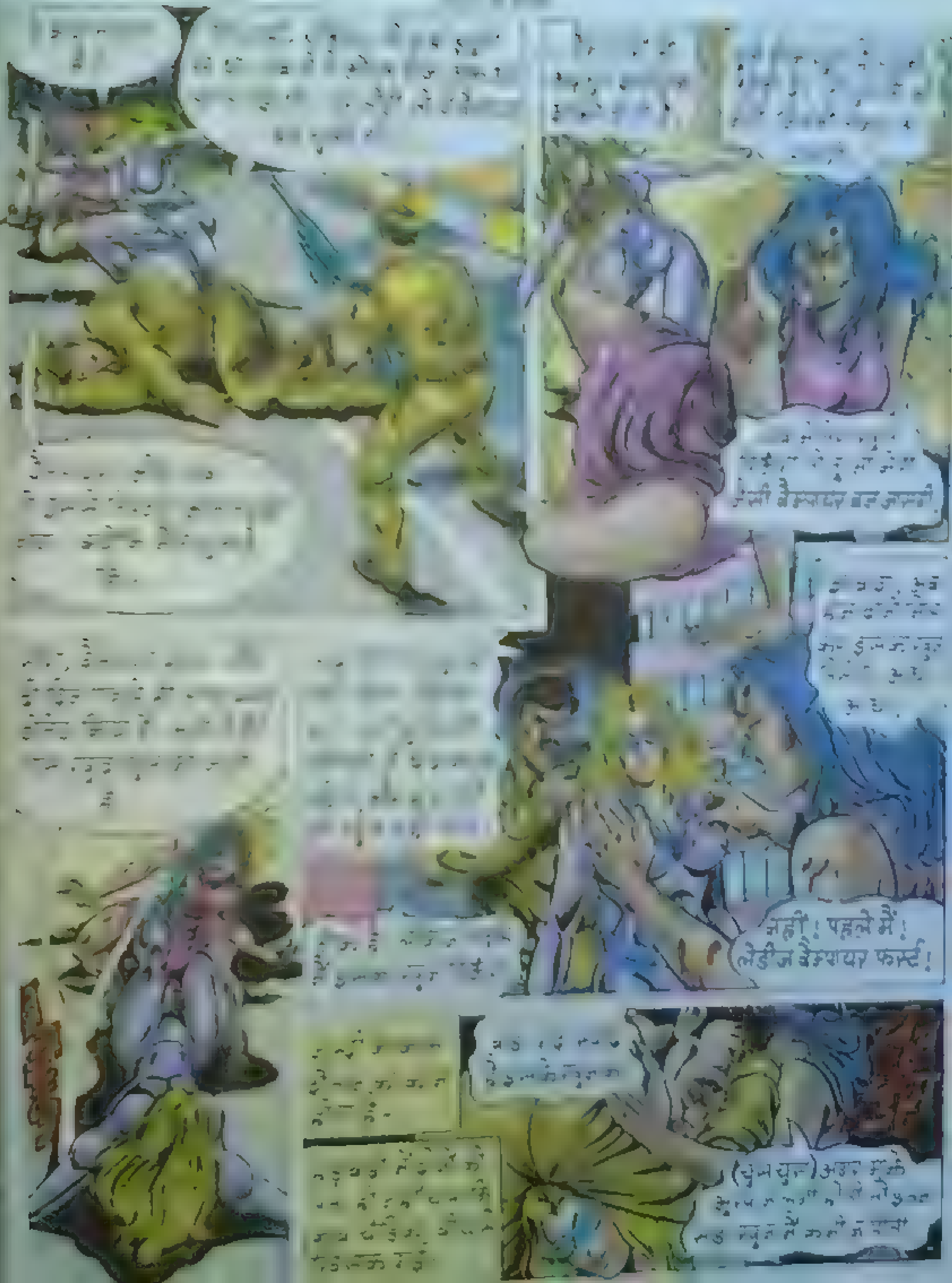

नहीं! पहले मैं! लेडीज वैम्पायर फर्स्ट!

...वैम्पायरों का उत्पादन करने वाली फैक्ट्री.

इलेक्ट्रिक चार्ज होता है.

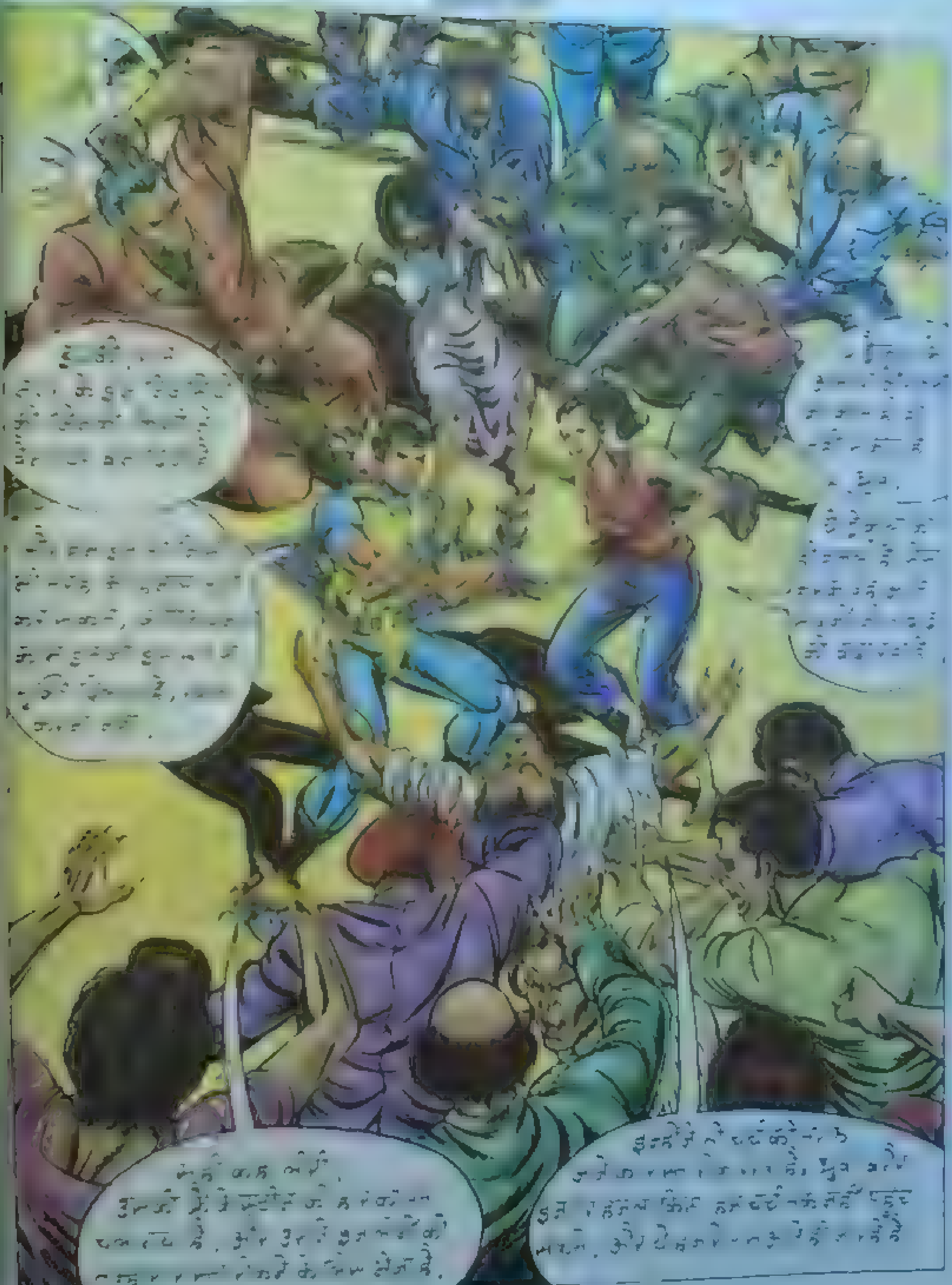

अपनी आँखों से
के रूप में देखा था। फिर ये अचानक

भी निकाला!
दिया है! और उसका इलाज
रगों में दौड़ रहा है,
तुम्हारा खून।

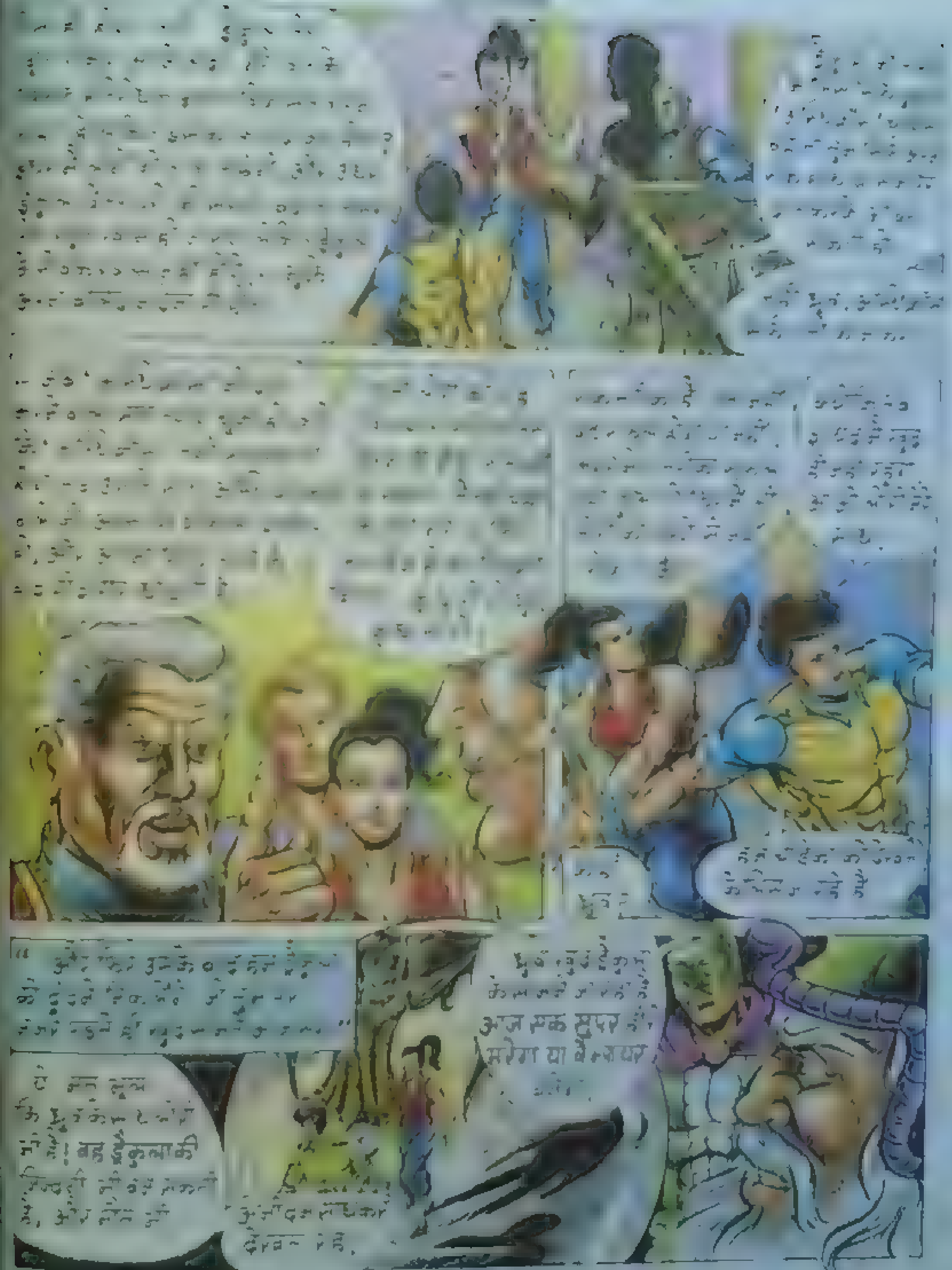

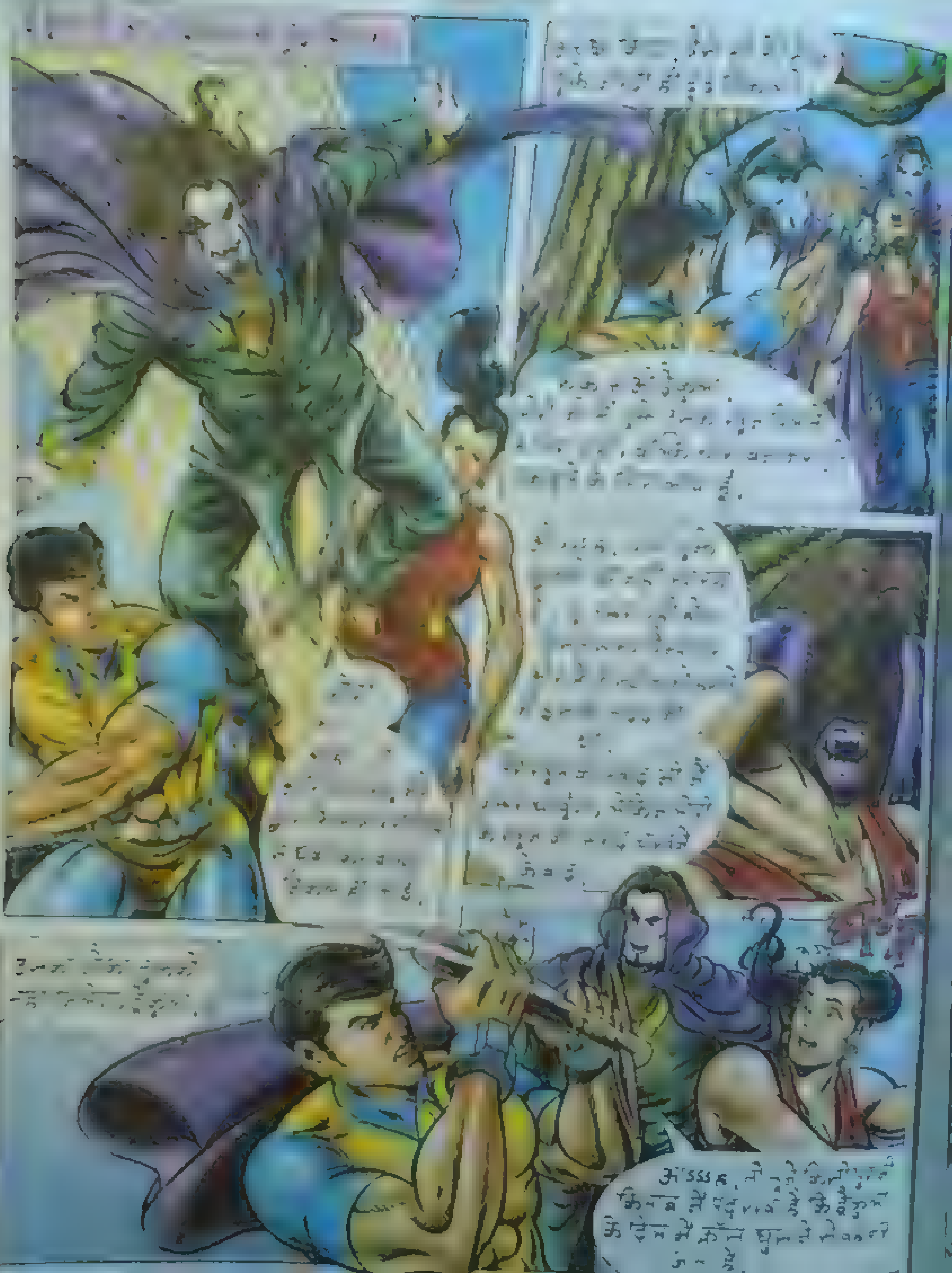
ओऽऽऽह,

और ध्रुव के
रही है!
तेरा खून चूसेंगे और
उधर में लोरी का!

चीं चींssss
अपने दोस्तों के आते ही ध्रुव को चमगादड़ों से छुटकारा मिल गया-
ओह! ड्रैकुला सोनी का खून पीने में सफल हो गया है!
धोखा! ये सोनी नहीं है। ये इंसान नहीं है, जिसकी मुझे तलाश थी!
मैं इतना बेवकूफ नहीं हूं कि सोनी को तुम्हारे सामने ले आता। ये सोनी के वेश में मेरी कमांडो फोर्स की कैडेट रेणु है!
इस धोखे की सजा तुझे मिलेगी!
ड्रैकुला की आंखें चमक उठीं-
और सम्मोहन किरणों ने ध्रुव के शरीर को जड़ कर दिया
अब मैं तेरा खून नहीं पिऊंगा...
...बल्कि मेरा खून तुझे पिलाएगा!
ओह! खून की धार मेरे शरीर की तरफ बढ़कर...
...मेरे शरीर के ऊपर चढ़कर उसको ढक रही है।

आऽऽऽह! ये खून मेरे जिन-जिन अंगों को घेरता जा रहा है, वे सारे अंग मेरे काबू से बाहर होते जा रहे हैं।
ओह, बच गया! पीटर ने पानी की धार को मेरी तरफ मोड़ दिया है! पानी इस रक्त को धो डालेगा!
नहीं! ये तो गोंद की तरह गाढ़ा है! पानी से भी नहीं धुला!
और इसके चढ़ने की गति और तेज हो गई है! क्या करूं? कैसे हटाऊं इस खून को!
ओह, यस!
मैं कोशिश करूं तो गले से थोड़ी बहुत आवाज निकाल सकता हूं!
चीं चीं चीं चूं चूंऽऽऽ
ध्रुव के इशारे पर चिड़ियों का झुंड बिजली के तारों से लटककर
और उड़ती चिड़ियों के बीच में से बिजली का तार टूटकर जमीन पर आ गिरा-
बिजली का तार जमीन पर गिरते ही खून की धार में भी करेंट दौड़ गया-
और ध्रुव के शरीर पर चढ़ी खून की पर्त टूट-टूटकर गिरने लगी-
ये... ये कैसे हो गया?
और साथ ही साथ करेंट के झटके ने ध्रुव के दिमाग को भी सम्मोहन से आजाद करा दिया-
विद्युत जैसी चीज तुम्हारे जमाने में सिर्फ आकाश पर ही चमका करती थी ड्रैकुला! इसीलिए तुम इसके गुण नहीं जानते हो!
इसकी धारा, रक्त में दौड़ते ही ये, उसमें से कोशिकाओं और पानी को अलग-अलग करके रक्त को नष्ट कर देता है!

जिलेटिन: वह पदार्थ जिससे दवाई के कैप्सूल बनाए जाते हैं। पेट के अम्ल इसको पिघला देते हैं।

Vinod Yadav

ये... ये क्या हुआ गुरुदेव? ड्रैकुला तो फिर मिट गया!
उसको तो हम फिर जिन्दा कर लेंगे। लेकिन यह अच्छा ही हुआ! अब हम ड्रैकुला को दुबारा जिन्दा करके उसको पूरी तरह से अपने नियंत्रण के बोझ तले दबा सकते हैं।
और लोरी के अस्थि-क्रोस से मरने के बाद उसका शरीर अब उसके प्रति भी प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेगा। अब ड्रैकुला उठेगा तो लोरी के मारे भी नहीं मरेगा। और अब हमने उसकी दूसरी कमजोरियों को भी भाँप लिया है। हमको पहले उन कमजोरियों को दूर करना है।
और फिर इसको नागराज की मौत का हथियार बनाना है। चलो राजनगर।
गुरुदेव और नागपाशा एक बार फिर निकल पड़े हैं ड्रैकुला को जिन्दा करने-
और इस बार जब ड्रैकुला उठेगा तो पहले से कहीं ज्यादा शक्तिशाली होगा।
और फिर एक दूसरे के सामने होंगे... नागराज और ड्रैकुला।